वैश्वीकरण (Globalisation)

वैश्वीकरण को भूमण्डलीकरण भी कहते हैं। वैश्वीकरण से हमारा तात्पर्य संकीर्ण राष्ट्रवाद के घेरे से निकलकर सम्पूर्ण विश्व या भू-मण्डल को ही अपना समझने से है। वैश्वीकरण एक ऐसी योग्यता है जिससे व्यक्ति अपनी जाति, संस्कृति तथा राष्ट्रीयता के संकीर्ण घेरे से निकलकर विश्व की सम्पूर्ण मानव जाति के प्रति आलोचनात्मक तथा निष्पक्ष एवं मूल्यांकन करने की योग्यता का विकास करता है।

सार संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना ही भू-मण्डलीकरण कहलाता है। इसे हम अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव का व्यापक तथा सुनिश्चित रूप कह सकते हैं। यह एक पारस्परिक विश्वास है जो जनमानस में व्याप्त होता है जिससे वे विश्व के सभी मनुष्यों को आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में एक दूसरे के निकट लाते हैं।

वैश्वीकरण के लिए शिक्षा

वैश्वीकरण की भावना के लिए शिक्षा एक उत्तम तथा उपयोगी साधन है। इस भावना के विकास के लिए हमें शिक्षा में निम्न परिवर्तन लाने हैं—

1. **शिक्षा के उद्देश्यों में परिवर्तन ⇒** यदि हम अपने छात्रों में वैश्वीकरण की भावना का विकास करना चाहते हैं तो हमें अपनी शिक्षा के उद्देश्यों का पुनर्निर्धारण करना होगा। आज जहाँ हम शिक्षा के सामाजिक, चारित्रिक, नैतिक तथा आदि उद्देश्यों की चर्चा करते हैं वहाँ हमें विश्व नागरिकता, विश्व एकता, सहयोग, सहकारिता तथा सहिष्णुता तथा वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का विकास करने की बात करनी होगी।
2. **पाठ्यक्रम में परिवर्तन ⇒** वैश्वीकरण की भावना का विकास करने के लिए हमें अपनी प्रचलित शिक्षा के

Scanned with CamScanner

पाठ्यक्रम में भी परिवर्तन करने होंगे। उदाहरण के लिए इतिहास का लेखन पुनः इस ढंग से किया जाये कि छात्र सम्पूर्ण विश्व को अपना समझे।

3. क्रियाएँ ⇒ छात्रों में वैश्वीकरण की भावना का विकास करने के लिए विद्यालयों में कुछ विशेष पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का आयोजन भी उपयोगी है। इस प्रकार की क्रियाओं में विश्व की महान् विभूतियों के जीवन तथा उपदेशों पर आयोजन किये जा सकते हैं। विश्व की विभिन्न समस्याओं पर परिचर्चा तथा भाषण-मालाओं का आयोजन किया जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर युवक-मेले, खेलकूद आदि को आयोजित किया जा सकता है तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विविध प्रकार की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जा सकती हैं।

4. अध्यापक ⇒ वैश्वीकरण की भावना का विकास करने में शिक्षक की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। यातायात तथा संचार के सुविकसित आधुनिक साधनों ने सम्पूर्ण विश्व को एक इकाई बना दिया है। विज्ञान तथा उद्योग पर आधारित आज का विश्व एक इकाई बन गया है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर अध्यापक को शिक्षण कार्य करना चाहिए।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि वैश्वीकरण की भावना का विकास विद्यालयों में ठीक उसी प्रकार से किया जा सकता है जिस प्रकार से युद्ध लड़ने की भावना विद्यालयों में ही विकसित की जाती है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अध्यापक की होती है। अध्यापक ही इस प्रकार की भावना का विकास कर सकता है।

Scanned with CamScanner